Delhi Achievers

Effort | Expertise | Success

2nd Year

JBT / D.EL.ED

Practical File

Medium – Hindi

Subject – Work & Art Education

Mob No. – 9910000347,
9560557999, 011-41555799

Topic ______ Date ______

INDEX

S. NO.	Topic	Page No.	Teacher Sign.
	Unit - I work Education		
1.	प्राथमिक चिकित्सा		
1.1	स्तब्धता का उपचार		
1.2	साँप के काटने पर		
1.3	रक्तस्राव का उपचार		
1.4	अस्थिभंग का उपचार		
2.	बागवानी और वृक्षारोपण		
3.	प्रदर्शनी व पर्यटन		
	राष्ट्रपति भवन		
	लाल किला		
4.	वयस्क साक्षरता कार्यक्रम		
5.	सड़क यातायात सुरक्षा		
6.	मिड - डे - मील		
7.	कक्षा की स्वच्छता और सौंदर्यीकरण		
	Unit - II Art Education		
1.	कला प्रशंसा और कला शिक्षा		
	कला के प्रकार		
	कला शिक्षा का बालक के जीवन में महत्व		

Topic Date

	आर्ट गैलरी बाल भवन शिल्प संग्रहालय		
2.	दृश्य कला		
3.	संगीत		
4.	सिनेमा और इलैक्ट्रानिक		
5.	मिडिया हिंदी साहित्य		

24/02/2021

Head Teacher
Govt. Primary School
DLF Phase-1 (...32)
G-Block, Gurugram

Topic Date

UNIT 1

WORK EDUCATI-ON

Principle Concept

Colours & Shapes

Topic ______ Date ______

1. प्राथमिक चिकित्सा

प्राथमिक चिकित्सा किट की तैयारी और उपयोग

किसी रोग के होने या चोट लगने पर किसी अप्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा जो सीमित उपचार किया जाता है उसे प्राथमिक चिकित्सा कहते है इसका उद्देश्य कम से कम साधनो मे इतनी व्यवस्था करना होता है कि चोट ग्रस्त व्यक्ति को सम्यक इलाज कराने की स्थिती मे लाने वाले समय मे कम-से कम नुकसान हो। अत: प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षित या अप्रशिक्षित व्यक्तियो द्वारा कम से कम साधनो मे साधनो किया गया सरल उपचार है कभी - कभी यह जीवन रक्षक भी सिद्ध हो जाता है।

प्राथमिक उपचार मे आवश्यक बातें

प्राथमिक उपचार आकास्मिक दुर्घटना के अवसर पर उन वस्तुओं से सहायता करने तक ही सीमित है जो उस समय प्राप्त हो सके। इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। चोट पर दोबारा पट्टी बाँधना तथा उसके बाद का दूसरा इलाज प्राथमिक उपचार की सीमा से बाहर है।

- प्राथमिक उपचार को आवश्यकतानुसार रोगामिलान करना चाहिए।

घायल व्यक्ति को कितनी कैसे और कहां तक सहायता की जाए इस पर विचार करना चाहिए।

Concept SG Colours & Shapes

Topic ______ Date ______

रोग या घाव संबंधी आवश्यक बातें

रोगी की स्थिती, इसमे रोगी की दशा और स्थिती देखनी चाहिए।

चिन्ह, लक्षण या वृत्तांत, अर्थात् घायल के शारीरगत चिन्ह जैसे सूजन, कुरूपता, रक्तस्त्राव इत्यादि। प्राथमिक उपचारक को अपनी ज्ञानेन्द्रियों से पहचानना तथा लक्षण जैसे पीडा, जड़ता, कमजोरी, प्यास इत्यादि। पर ध्यान देना चाहिए यदि घायल व्यक्ति होश मे हो तो रोग और वृत्तांत उससे या उसके आस-पास के लोगो से पूछना चाहिए रोग वृत्तांत के साथ लक्षणो पर विचार करने पर निदान मे बड़ी सहायता मिलती है।

यदि कारण का बोध हो जाए तो उसके फल का बहुत कुछ बोध हो सकता है। परंतु स्मरण रहे कि एक कारण से दो स्थानो पर चोट अर्थात् इसके दो फल हो सकते है। अथवा एक कारण से एक फल का ज्ञात हो सकता है या कोई दूसरा फल जिसका संबंध उस कारण से न हो कभी-कभी कारण के फल काफी देर तक रहते है। जैसे गले मे फंदा इत्यादि।

प्राथमिक उपचार करने वाले व्यक्ति के गुण

* विवेकी, जिससे वह दुर्घटना के चिन्ह पहचान सके।

* व्यवहारकुशल, जिससे घटना संबंधी जानकारी जल्द से जल्द प्राप्त करते हुए वह रोगी का विश्वास प्राप्त कर सके

* युक्तिपूर्ण जिससे वह निकटतम साधनो का प्रयोग कर प्रकृति का सहायक बने।

★ निपुण, जिससे वह ऐसे उपायों को काम मे लाए जिससे रोगी को उठाने इत्यादि मे कष्ट न हो।

★ स्पष्टता, जिससे वह लोगो की सहायता मे ठीक अगुवाई कर सके।

★ विवेचक, जिससे गंभीर एवं घातक चोटो को पहचान कर इनका उपचार पहले करें।

★ सहानुभूतियुक्त, जिससे रोगी को हिम्मत दे सके।

1.1 स्तब्धता (Shock) का प्राथमिक उपचार

1) गर्दन, छाती और कमर के कपड़े ढीले करके हवा दे।
2) यदि रक्तस्राव हो रहा हो तो, जल्द ही इसे बंद करने का उपाय करे।
3) रोगी को पीठ के बल लेटा कर एक तरफ सिर नीचा करे।
4) रोगी को गर्माहट देने के लिए गर्म कपड़े से लपेटे व गर्म पानी से पैर की सिकाई करे।
5) सिर मे चोट न हो तो स्मेलिंग साल्ट सुंघाएं और होश मे आने पर गरम चाय अधिक चीनी डालकर पिलाए
6) आवश्यकता होने पर ऑक्सीजन उपलब्ध करे।

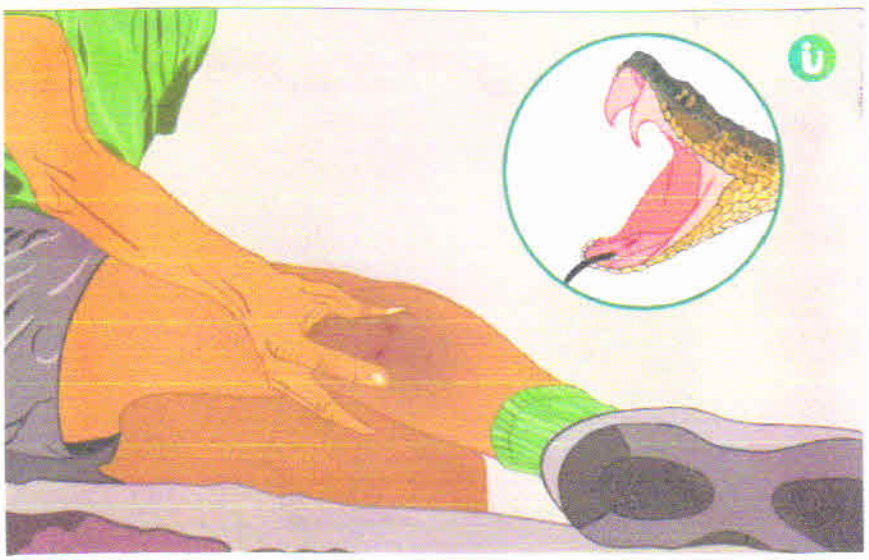
u

Topic Date 4

1.2 साँप काटने पर प्राथमिक उपचार

अधिकतर साँप विषैले नही होते उनके काटने पर घाव को साफ करने और दवाई लगाने पर ठीक हो जाता है लेकिन विषैले साँप के काटने पर जल्द से जल्द प्राथमिक उपचार की आवश्यकता होती है.

लक्षण

1. साँप के काटने पर त्वचा पर दो लाल रंग के निशान आते है।
2. जहां साँप ने काटा हो वहां सुन्न पड़ जाता है।
3. काटे हुए स्थान पर सूजन आना।
4. आंखो मे धुंधलापन
5. सांस लेने और बात करने मे मुश्किल होना।
6. मुंह से झाग आना।
7. बदन का नीला पड़ जाना।

प्राथमिक चिकित्सा के चरण

1. काटे हुए स्थान और उसके आस-पास बर्फ पैक लगाये ताकि इससे जहर का फैलना कम हो जाए।
2. प्रभावित व्यक्ति को सोने न दे और हर पल उस पर नजर रखे।
3. होश आने पर ABC फॉर्म अपनाए। (A= airway B= Breathing and C= Circulation)
4. रोगी को आश्वासन दे उसे आराम दे। शांत रखे।
5. जितना जल्दी हो सके मरीज को अस्पताल पहुचाएं।

Colours & Shapes

Page Date

1.3 रक्तस्राव का प्राथमिक उपचार

रक्तस्राव (Bleeding or Haemorrhage) शब्द का अर्थ है रक्तवाहिकाओं से रक्त का बाहर निकलना। जब तक रक्तवाहिकाओं में क्षत या छिद्र न हो, तब तक रक्तस्राव का होना संभव नहीं है। चोट या रोग के कारण ही रक्तवाहिकाओं में क्षत या छिद्र होते हैं। चोट लगने पर तत्काल रक्तस्राव होना प्राथमिक रक्तस्राव कहलाता है। और चोट लगने के कुछ काल पश्चात् रक्तस्राव होना गौण रक्तस्राव कहलाता है। यदि रक्त धमनी से बाहर निकलता है तो यह धमनीय रक्तस्राव कहलाता है।

प्राथमिक उपचार

1. घायल को हमेशा ऐसे स्थान पर धीरे-धीरे लिटाएँ जिससे रक्तस्राव का वेग कम रहे।
2. अंगों के टूटने की अवस्था को छोड़कर अन्य सभी अवस्थाओं में जिस अंग से खून बह रहा हो उसे ऊँचा रखें।
3. कपड़े हटाकर घाव पर हवा लगने दें, तथा रक्तस्राव के भाग को उंगली से दबाकर रखें।

Private Concept SG Colours & Shapes

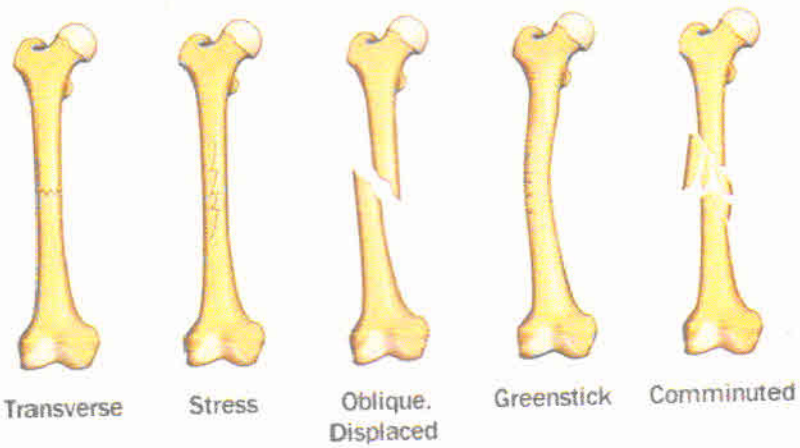
Transverse
Stress
Oblique.
Displaced
Greenstick
Comminuted

Date

4. बाहरी वस्तु जैसे शीशा, बाल, कपड़े के टुकड़े आदि को घाव में से निकाल दे।

5. घाव के आस-पास के स्थान पर जीवाणुनाशक तथा बीच में रक्तस्रावविरोधी दवा लगाकर, रूई गाज या लिंट रखकर बांध दे।

1.4 अस्थिभंग की प्राथमिक उपचार

अस्थिभंग एक चिकित्सीय स्थिति है जिसमे हड्डी की निरंतरता मे चोट और रोगजनक (पैथोजेनिक) फ्रैक्चर - हड्डी टूटने की कुछ चिकित्सीय परिस्थिती जैसे कि अस्थि सुषिरता (आस्टियोपोरोसिस) या अस्थिजनन अपूर्णता। के कारण अस्थियाँ कमजोर हो जाती है तथा मामूली आघात या थोड़ी-सी चोट लगने पर टूट जाती है।

प्राथमिक उपचार

1. अस्थिभंग (fracture) वाले स्थान को पट्टियों तथा अन्य उपचार से अचल बनाए रोगी को स्थानांतरित न करे।

2. चोट के स्थान से यदि रक्तस्राव हो रहा हो तो प्रथमत: उसका उपचार करे।

3. बड़ी चौकसी के साथ बिना बल लगाएं अंग को यथासाध्य

Topic _____ Date _____

अपने स्वाभाविक स्थान पर बैठा दें।

4. चपातियों (Splints) पट्टियों (Bandages) और लटकानेवाली पट्टियों अर्थात् औजों के प्रयोग से भग्न अस्थिवाले भाग को यथासंभव स्वाभाविक स्थान पर बनाए रखने की चेष्टा करे।

5. जब संशय हो की हड्डी टूटी है या नहीं, तब भी उपचार उसी भाँति करे जैसे हड्डी टूटने पर होना चाहिए।

2. बागवानी और वृक्षारोपण

सामान्य कीटो और पौधो के रोग और साधारण रसायनिक और पौधो के संरक्षण उपकरणो के उपयोग से परिचित होना

वृक्ष मानव मित्र है। ये मानव को दैहिक, दैविय और भौतिक तीनो तापो से मुक्ति दिलाने मे सहायक है। आज का भौतिकतावादी मानव अपनी सुख सुविधाओ के लिए वृक्षो की अंधाधुंध कटाई कर रहा है।

पौधो मे रोग

पौधो हमारे जीवन का एक अहम हिस्सा है। इनमे अधिकांश तौर पर रोग कवक के कारण होता है परन्तु बैक्टीरियाँ और वायरस भी कुछ अन्य रोगो को पैदा करते है पौधो मे कुछ बीमारियाँ abiotic होती है और वायु प्रदूषण, पोषक तत्वो की कमी आदि के कारण भी ये रोग बढ सकते है।
पौधो के रोग के लक्षणो मे रंग, आकार और कार्य मे परिवर्तन होना शामिल होता है।
इन रोगो के कारण पत्तियो का रंग भी उड़ सकता है या पौधे की पत्तियो पर कुछ पैच भी दिखाई दे सकते है।

Topic ______ Date ______

बीजोपचार का कृषि मे महत्व

कृषि क्षेत्र की प्राथमिकता उत्पादकता को बनाए रखने तथा बढने मे बीज का महत्वपूर्ण स्थान है. उत्पादकता बढाने के लिए उत्तम बीज का होना अनिवार्य है। उत्तम बीजो के चुनाव के बाद उनका उचित बीजोपचार भी जरूरी है। क्योंकि बहुत से रोग बीजो से फैलते है।

बीजोपचार के लाभ

1) बीजोढ रोगो का नियंत्रण — छोटे दाने की फसलो मूंगफलियो व कपास के बीज के अधिकांश बीजोढ रोगो के लिए बीज निसंक्रमण व बीज धूमन बहुत प्रभावकारी होता है।

2) मृदोढ रोगो का नियंत्रण — मृदोढ कवक, जीवाणु व सूत्रकृमि से बीज व तरुण पौधो को बचाने के लिए बीजो को कवकनाशी रसायन से उपचारित किया जाता है।

3) कीटों से सुरक्षा — भंडार मे रखने से पूर्व बीज को किसी उपयुक्त कीटनाशी से उपचारित कर देने से वह भंडार के दौरान सुरक्षित रहता है।

4) मृदा कीटे का नियंत्रण — कीटनाशी और कवक संयुक्त उपचार करने से बुआई के बाद मृदा मे सुरक्षित रहता है।

Concept
SG
Colours & Shapes

Topic ______ Date ______

3. प्रदर्शनियों, पिकनिक, पर्यटन और भ्रमण कार्यों के आयोजन में स्कूल अधिकारियों की मदद

A Visit to Historical Place - Red Fort

उद्देश्य
(1) विभिन्न प्रकार के इमारती पत्थर दिखाना
(2) लाल किले पर की गई नक्काशी दिखाना
(3) लाल किले के निर्माण संबंधी ज्ञान को बढ़ाना
(4) छात्रों को शैक्षिक ज्ञान देना जो उनके मन तथा मस्तिष्क दोनों को छुए।

आवश्यक सामग्री
(1) पानी व बिस्कीटस
(2) प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स
(3) बच्चों के नामों की लिस्ट
(4) टिफिन्स

योजना यात्रा सुबह स्कूल के समय पर आरंभ होगी सभी बच्चों को लाईन लगवाकर अध्यापक की निगरानी मे बस मे बैठाया जाएगा। व उन्हें समय-समय पर खाने-पीने की वस्तुएं दी जाएगी। एक मैदान मे बैठाकर सभी बालकों को भोजन कराया जाएगा उसके बाद उन्हें लाल-किला भ्रमण करवाया गया लाल किले के इतिहास, बनावट आदि की जानकारी दी गई। उन्हें कुछ और ऐतिहासिक इमारते भी दिखाई गई। तथा शाम को बस स्कूल मैदान मे पहुंच गई जहां से माता-पिता अपने बच्चों को घर ले गए।

Topic ____________ Date ________

A visit to President's House (Rashtrapati Bhavan)

उद्धेश्य

(1) राष्ट्रपति भवन के निर्माण के बारे मे छात्रो को जानकारी देना

(2) राष्ट्रपति भवन का इतिहास बच्चो को बताना

(3) अपने देश के शाही और शान के प्रतीक से बच्चो को अवगत कराना।

सामग्री

(1) पानी

(2) प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स

(3) बच्चो के नाम की लिस्ट

(4) भवन मे प्रवेश हेतु अनुमति पत्र

योजना यात्रा सुबह स्कूल के समय पर आरम्भ होगी सभी बच्चो को लाईन लगाकर अध्यापक की निगरानी मे बस मे बैठाया जाएगा। व उन्हे खाना के लिए कुछ बस मे ही दे दिया गया। राष्ट्रपति भवन पहुंचने के पश्चात उन्हे जानकारी दी गई। जिसमे उन्हे बताया गया राष्ट्रपति भवन भारत के राष्ट्रपति का अधिकारिक निवास होता है। इसे 1931 मे एडविन लुटियन द्वारा डिजाइन किया गया था इसे मूलत: वायसराय हाउस भी कहा जाता था भवन के आगे प्रसिद्ध और खूबसूरत मुगल गार्डन है। इसके पश्चात बालको landscape को भवन के गार्डन मे भोजन कराया गया। फिर सभी बच्चो को बस मे बैठा कर स्कूल वापस लाया गया जहां से उनके माता-पिता उन्हे लेने आ चुके थे यह यात्रा बच्चो को बेहद खुश कर गई।

Colours & Shapes

Topic ________________ 12 Date ________

4. वयस्क साक्षरता कार्यक्रम मै भागीदारी

वयस्क या प्रौढ शिक्षा ही समाज मे निरक्षरता को हटाने का एक मात्र यंत्र है प्रौढ शिक्षा अंशकालिक शिक्षा होती है जो 15-35 आयु वर्ग वाले लोगो को दी जाती है उन लोगो को जिन्होने पहले कभी स्कूली शिक्षा नही प्राप्त की

वयस्क शिक्षा विशेष रूप से हाल के वर्षों मे, हम सभी मानते है की संचार और सुचना साक्षात्करण तेजी से बढा है जैसा की ज्ञात है प्रतियोगिता की सबसे महत्वपूर्ण शर्त समय बर्बाद किए बिना नवाचारो का पालन और अनुकूलन करना है जो संस्थाएं और संगठन उसे लागू नही कर सकते है, वह कुछ समय बाद गायब हो जाते हो जैसा की हम जानते है की शिक्षा सभी आयु वर्ग के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है. और इसे जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया माना जाता है शिक्षा की प्रक्रिया किसी भी आयु वर्ग, व्यक्ति स्थान या जीवन की अन्य परिस्थितियों तक सीमित नही है।

वयस्क शिक्षा प्रदान करने के लिए वयस्क सेंटर चलाए जाते है और वहां लोग शिक्षा ग्रहण कर सकते है। वयस्क शिक्षा समाज सुधार मे सहायक है।

5. सड़क यातायात सुरक्षा और ट्रैफिक रूल्स

सड़क यातायात सुरक्षा एक प्रकार की विधी या उपाय है जिससे सड़क दुर्घटना मे लोगो को चोट लगने या मौत हो जाने की घटनाओ को कम करने का प्रयास है सड़क का उपयोग करने वाले सभी लोग जिसमे पैदल चलने वाले, साइकील गाडी चालक या सार्वजनिक यातायात साधनो का उपयोग करने वाले शामिल है। सड़क यातायात सुरक्षा हेतु घटनाओ को देखकर रणनीति बनाई जाती है। वर्तमान मे सड़क के आस-पास के मोहल्ले को देखकर वाहन की गति आदि तय की जाती है।

यातायात नियम

1 गति सीमा मे वाहन चलाना (Speed limit)

सड़क पर वाहन चलाने के लिए वाहन की एक गति सीमा निश्चित की जाती है। जिसके अंतर्गत ही गाडी की रफ्तार होनी चाहिए जैसे कई जगह पर लिखा होता है। 40 km प्रति घंटा यानि वाहन की गति 40 के आस-पास ही होनी चाहिए। लेकिन लोग अपनी जल्दबाजी मे इस नियम का उल्लंघन करते है। जिससे अधिकतर सड़क हादसे होते है।

Topic 14(7) Date

2. यातायात सिग्नल को फॉलो करना
(Fallowing the traffic signal)

गाड़ियों को चलाते समय Traffic signal का पालन करना बहुत ही आवश्यक होता है। यानि हर रोज हर चौराहे, हर गली हर मोड के लिए Traffic Signal बने होते जिन्हे हर किसी को Traffic Signal follow करना चाहिए लेकिन देखा जाए तो सबसे ज्यादा पहले लोग Traffic Signal Rule को ही तोड़ते है। जिससे वह गलत दिशा मे गाडी ले जाने के कारण भयंकर हादसों का शिकार हो सकते है।

3. एकल मार्ग (one way)

अक्सर देखा जाता है कि लोग one way मे भी गलत रास्ते से चलते हुए गाडी उल्टी दिशा की तरफ चलाते है। जिससे सामने से आने वाले के लिए गाड़ी चलाने मे व्यवधान उत्पन्न होता है। जिससे सड़क दुर्घटना के अवसर अधिक बढ़ जाते है। तो ऐसे मे हमेशा यात्रा के लिए सही मार्ग पर सही दिशा मे ही वाहन चलाना चाहिए।

Topic ____ Date ____

6. मिड-डे-मील तैयार करने एवं वितरण मे सहायता

मध्यान भोजन योजना

मध्यान भोजन योजना, भारत सरकार द्वारा स्वचालित योजना है जिसके अंतर्गत प्राथमिक और लघु-माध्यमिक विद्यालयो के छात्रो को दोपहर का भोजन नि:शुल्क प्रदान किया जाता है इसका उद्देश्य विद्यालय मे नामांकन बढने प्रतिधारण और उपस्थीति तथा इसके साथ-साथ बच्चो मे पौष्टिक स्तर मे सुधार करने के लिए 15 अगस्त 1995 को केंद्रीय प्रायोजित स्किम के रूप मे प्रारंभिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पौष्टिक सहायता कार्यक्रम शुरू किया गया था

कार्यक्रम के उद्देश्य

1. सरकारी स्थानीय निकाय और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल और शिक्षा गारंटी योजना और वैकल्पिक प्रयोगात्मक शिक्षा केंद्रो तथा सर्वशिक्षा अभियान के तहत सहायता प्राप्त मदरसों एवं मकतबों मे वर्ग 1 से 8 के बच्चो के पोषक स्तर मे सुधार करना।

2. लाभांवित वर्गो के गरीब बच्चो को नियमीत रूप से स्कूल आने और कक्षा के

कार्यकलापों पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करना।

3. ग्रीष्मावकाश के दौरान अकाल पीड़ित क्षेत्रों में प्रारंभिक स्तर के बच्चों को पोषण सम्बन्धी सहायता प्रदान करना।

केंद्रीय सहायता के संघटक

1. प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए 100 ग्राम प्रति बच्चा प्रति स्कूल दिवस की दर से उच्च प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए 150 ग्राम प्रति बच्चा प्रति स्कूल दिवस की दर से भारतीय खाद्य निगम के निकटतम गोदाम से निःशुल्क खाद्यान्न (गेहूं/चावल) की आपूर्ति।

2. विशेष श्रेणी वाले राज्यों (अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, सिक्किम, जम्मू कश्मीर व हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, त्रिपुरा के लिए 1-12-2009 से इनमें प्रचलित पी. डी. सी दरों के अनुसार परिवहन सहायता।

मध्यान भोजन योजना का नवीनीकरण

12 वी योजना के दौरान मध्याह्न भोजन योजना (MDMS) का निम्न प्रकार से सुधार हुआ

- मध्यान भोजन योजना का जनजाति, अनुसूचित जाति और अल्पसंख्यक बहुल जिलों के

गैर सहायता प्राप्त निजी स्कूलो मे विस्तार।

- प्राथमिक विद्यालयो की परिसरो मे स्थित पूर्व-प्राईमरी कक्षाओं मे पढने वाले बच्चो के लिए भी इस योजना का विस्तार
- मौजूदा घटको या स्कूलो के लिए सहायता के तौर तरीको का संशोधन
- उतर-पूर्वी प्रदेश को छोडकर अन्य राज्यो के लिए माल वाहन सहायता का संशोधन।
- इसकी 75 रूपये प्रति क्विंटल की मौजूदा सीमा को बढाकर 150 रूपए प्रति क्विंटल की गई है।
- सहायता की यह राशी केंद्र और राज्य के बीच 60:40 के अनुपात से और उतर-पूर्वी प्रदेश के राज्यो को 90:10 के अनुपात से दी जाती है।

Topic _____ Date _____

7. कक्षा की स्वच्छता और सौंदर्यकरण

अपने स्कूल मे एक कार्यक्रम करे जहां छात्रो, शिक्षको और यहां का भी माता - पिता का एक समूह आपके विद्यालय के परिसर को गहराई से साफ करने मे मदद कर सकता है।

सफाई के लिए आवश्यक सामग्री

- झाड़ू के दस्ताने
- कचरे के बैग्स
- पंख झाड़ने वाले
- टॉयलेट ब्रश
- वस्त्र
- पौधो की सफाई हेतु सामग्री

इन आइटो को अपना कर स्कूल वातावरण को स्वच्छ रखा जा सकता है.

1) स्कूल की इमारत मे प्रवेश करने से पहले अपने पैरो को मैट पर पोछ ले।

2) किसी भी कचरे को आप कचरे के डिब्बे मे फेंक दे।

3) प्लास्टिक की वस्तुओ और कागज आदि को Recycle करना।

Topic Date

4) कीताबो व अन्य वस्तुओं को इस्तेमाल करने के बाद उनकी जगह पर वापस रख दे।

5) खाने के पश्चात् यह सुनिश्चित करे कि आपकी भोजन करने की टेबल साफ हो उसे गंदा न छोडे।

6) फर्श पर किसी भी प्रकार की गंदगी होने पर उसे साफ करे।

7) इस बात को अपने मस्तिष्क मे रखे कि स्कूल वातावरण को कोई नुकसान न पहुंचे।

8) <u>सौंदर्यकरण कार्यक्रम का आयोजन</u>

1) सफाई व्यवस्थित करने के लिए अपने स्कूल से अनुमति ले।

2) सफाई के लिए सभी उपकरण उपस्थित करे

3) इस कार्यक्रम के बारे मे सभी को सुचित करे

4) इस कार्यक्रम के लिए छात्रो को समूहो मे व्यवस्थित करे।

5) उन सफाई क्षेत्रो पर ध्यान दे जिन्हे अक्सर अनदेखा किया जाता है।

6) सुरक्षित सफाई प्रथाओ का अभ्यास करे।

17/02/21

Head Teacher
Govt. Primary School
DLF P... (32)
G-Block, Gurugram

Concept SG Colours & Shapes

Topic Date

UNIT 2
ART EDUCATI-
ON

Colours & Shapes

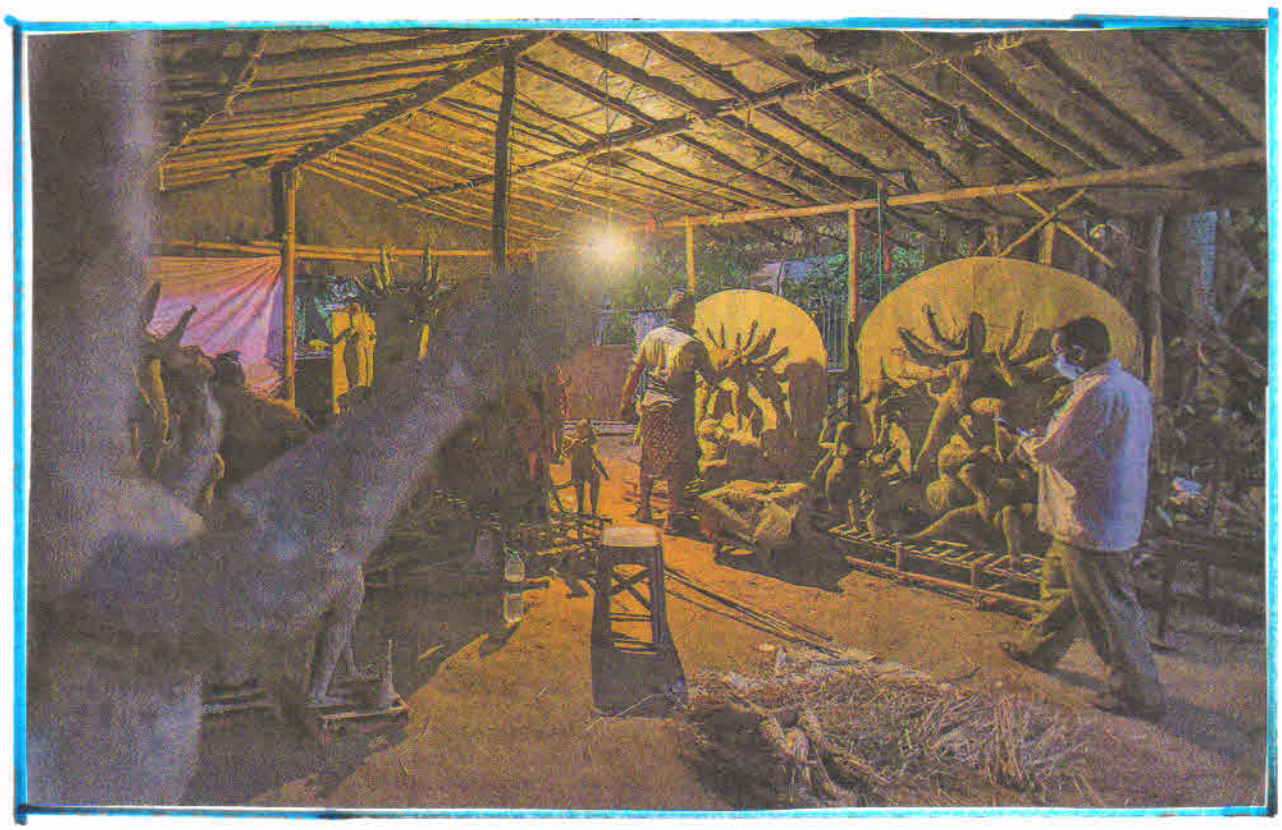

Topic ______ Date ______

1. कला प्रशंसा और कला शिक्षा

कला।

मनुष्य द्वारा अपने रचनात्मक कौशल को कल्पनात्मक तथा क्रियात्मक ढंग से अभिव्यक्त करने के सभी लोगों के अलग - अलग ढंग होते है कोई चित्र द्वारा कोई लेखनी द्वारा तो कोई अन्य तरीके से विचार अभिव्यक्त करता है।

कला के लक्ष्य

मानव जीवन का कोई ऐसा कार्य नही है, जो बिना किसी उद्धेश्य के किया जाए कला के भी अपने लक्ष्य होते है। जो की निम्नलिखित प्रकार से वर्णित किए गए है।

- कला के द्वारा बच्चों के कोमल मन को वांछित दिशा मे मोडा जा सकता है।
- खाली समय का सदुपयोग कराना।
- प्राचीनकला से परिचित करवाकर उन्हे विभिन्न कलाओं के संरक्षण की भावना जाग्रत करना।
- इससे बच्चे क्रियाशील होते है तथा बच्चों की कला मे धीरे - धीरे निखार आने लगता है।
- बालक मे आत्मनिर्भरता की भावना जाग्रत होती है।

उद्धेश्य

कला शिक्षा के दो प्रमुख उद्धेश्य है।

(a) सामान्य उद्धेश्य (b) मनोवैज्ञानिक उद्धेश्य

Topic ______ Date 21

(A) सामान्य उद्येश्य

(i) सामाजिक प्रवृत्ति — बच्चों को सामाजिक वातावरण में जीवन व्यतीत करने के लिए भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं का अविर्भाव जागृत होता है। उन चीजों की वह धीरे-धीरे पूर्ति करे तथा उनको सीखता चले।
जैसे = शिक्षित होने के लिए विद्यालय और स्वस्थ रहने के लिए औषधियाँ उपलब्ध होना।

(ii) आर्थिक प्रवृत्ति — मनुष्य के मुख्य रूप से दो उद्येश्य होते है चल तथा अचल
चल में वे वस्तुएं शामिल है जो सरलतापूर्वक उचित स्थान पर बैठाई जा सकती है और अचल में वे वस्तुएं शामिल होती है जिनका स्थानांतरण हो सके।

(B) मनोवैज्ञानिक उद्येश्य

(i) बेसिक शिक्षा — बेसिक शिक्षा जो भी बालक के वातावरण के द्वारा द्वारा मिलती है। Education through the activity
इसमें अन्य विषयों को उसके माध्यम बालकों को इसका ज्ञान दिया जा सकता है।

(ii) भावना शक्ति — प्रत्येक वस्तु के निर्माण की पूर्ण भावना जागृत होती है।
प्रत्येक व्यक्ति में अपनी ताकत के अनुसार भावनाएं होती है इसमें धीरे-धीरे वृद्धि कर उन्हे सुदृढ बनाना ही कला का उद्येश्य होता है।

Topic _____ Date 22

(iii) मिल-जुल कर काम करने की शक्ति

कला का उद्देश्य लोगों को मे मिलकर कार्य करने की शक्ति विकसित करना भी है। मनुष्य कई लोगों के समक्ष अपनी कला को प्रदर्शित करता है और अपने विचारों को अभिव्यक्त करता है।

(iv) आर्थिक लाभ किसी भी वस्तु को कलात्मक ढंग से बनाने पर उसके मूल्य की वृद्धि होती है। वह दुगुने दामों पर मिलती है।

कला के प्रकार

संसार मे सबसे प्राचीन वेद माने जाते है। वेद ऋचा मे कला का अद्भुत वर्णन मिलता है। अतः यह कहा जाता है कि कला का जन्म सौंदर्यानुभूति व भावों से होता है। कला की अनुभूति सत्यम शिवम, सुन्दरम तीनों मे ही संभव है।

अरस्तु ने कला के तीन भेद बताएँ है।

(i) ललित कला संगीत, चित्रकारी, मूर्ति कला, नाट्य काव्य, स्थापत्यकला आदि ललित कलाएँ कहलाती है। इसमे रस आनंद अधिक होती है। यह मन मे सतुंष्टि प्रदान करती है। आत्मा को प्रभावित करती है। संगीत द्वारा शोक, क्रोध, आनंद को प्रकट किया जा सकता है।

Topic ____________ Date ________

23

(ii) आचरण विषयक कला — यह कला सदैव उपदेशात्मक रही है। इन कला का मुख्य उद्देश्य सदैव चरित्र निर्माण रहा है। यह कला चरित्र की ओर समाज को अग्रसर करता है। सत्यम, शिवम व सुन्दरम मे शिव का महत्व इस बात मे है। कि समाज को अच्छे आचरण की ओर अग्रसर करता है।

(iii) उदार कला — व्याकरण, तर्क रेखागणित आदि सभी का उदार कला मे स्थान है। कला संकाय के अन्तर्गत कोई विषय ऐसा नही है। जिसका कला से सम्बंध न हो

कला शिक्षा का बालक के जीवन मे महत्व

बच्चो के जीवन मे कला का बहुत महत्व है कला आत्म - अभिव्यक्ति के लिए सशक्त माध्यम है। मनुष्य का कोई भी कार्य ऐसा नही जिसमे कला का महत्व न हो।

कला शिक्षा बालक मे प्रतिभा को उजागर करती है। यह बच्चे के जीवन का आधार बनाती है प्रत्येक बालक मे प्रतिभा का भंडार होती है। कला शिक्षण का महत्व इस प्रकार स्पष्ट कर सकते है

24

Topic Date

(ii) भावात्मक अनुभूति को प्रकट करने का साधन

ईश्वर द्वारा निर्मित मानव मे भावनाएं अत्याधिक है। इन भावनाओ को वह कला के माध्यम से प्रकट करता है।

(iii) यह कल्पना शक्ति को प्रकट करती है।

सृजनशीलता मानव की जन्मजात प्रवृति है। वह कला के माध्यम से अपनी सृजनशीलता का प्रदर्शन करता है।

(iv) चरित्र निर्माण करती है।

मानव के चरित्र का निर्माण करने का यह सशक्त माध्यम है। इससे मानव मे विचार व्यक्त करना, नैतिकता, सहानुभूति तथा मैत्री भावना विकसित होती है।

(v) आर्थिक विकास मे सहायक है।

मानव द्वारा निर्मित कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करके उन्हे बेचकर आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

25

Topic ________ Date ________

(vi) सौंदर्यानुभूति को विकसित करती है

सुन्दरता मानव की कला की आत्मा मे विद्यमान है. यह सौंदर्यानुभूति को विकसित करने मे मदद करती है.

(vii) कला सर्वव्यापी है। सभी देशो मे कला व ललित कला का विकास होने के कारण यह विभिन्न देशो के लोगो को निकट लाती है।

(viii) खाली समय का सदुपयोग मनुष्य खाली समय मे ललित कलाओं मे रूचि लेता है वह नए-नए चीजो का निर्माण करता है. इससे बालक मे skill Develop होती है, जिसे वह व्यवसायिक तौर पर अपना कर अपने लिए जीविका का साधन बना सकते है इससे देश की प्राचीन सभ्यता को भी बढावा मिलेगा। सास्कृतिक वस्तुएँ बना कर उनको बेचना। हस्तकला का एक अच्छा उदाहरण हो सकता है. इससे भारतीय सभ्यता भी जीवित रहेगी।

M

Topic Date

आर्ट गैलरी

ART GALLERY

आर्ट गैलरी या कला संग्राहलय उस स्थान को कहा जाता है जहां पर कला से संबंधित वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाई जाती है, संग्राहलय व्यक्तिगत या सार्वजनिक दोनों तरह के हो सकते है लेकिन विशेष बात जो इन दोनों को अलग करती है वह यह है की इन संग्राहलयों मे क्या है तथा इसका मालिक कौन है। आमतौर पर कला के कार्यों को पेंटिंग के माध्यम से दिखाया जाता है लेकिन फर्नीचर, टैक्सटाईल, वस्त्र ड्राइंग, वॉटर कलर्स किताबें फोटोग्राफ आदि को भी संग्राहलय मे दिखाया जाता है आर्ट गैलरी अक्सर सांस्कृतिक सभाओं कविता पाठन आदि को भी प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रदर्शित करती रहती है

राष्ट्रीय चित्रशाला (art gallery) स्थापित करने का सर्वप्रथम प्रयास फ्रांसीसी क्रांति के पश्चात आरंभ हुआ।

27

Topic ______ Date ______

फ्रांस मे नेपोलियन ने सर्वप्रथम एक पुराने राजमहल लूव मे राष्ट्रीय चित्रशाला स्थापित करवाई जिसे बाद मे "म्यूजे नेपोलियन" भी कहा गया।
नेपोलियन ने अपने यूरोपीय हमलों मे जो कुछ कलात्मक सामग्री उपलब्ध की थी वह इस संग्रहालय मे रखी गई। इस प्रकार पहली बार साधारण जनता को एक ही भवन मे संसार भर की उत्कृष्ट कलात्मक सामग्री देखने को मिली। नेपोलियन ने विभिन्न देशों की सर्वोत्कृष्ट कलात्मक सामग्रियाँ उपलब्ध की थी। यह बात उन देशों को बहुत खटकती थी इसलिए बाद मे सभी देशों ने यह यत्न किया कि उनकी लूटी हुई कलात्मक वस्तुएं लौटा दी जाए इसी प्रयास से उन्हे अपने यहां भी राष्ट्रीय कलासंग्रहालय स्थापित करने की प्रेरणा मिली।

राष्ट्रीय बाल भवन
Picxy

Topic _____ Date _____

बाल भवन

BAL BHAWAN

राष्ट्रीय बाल भवन एक ऐसा संस्थान है जो बच्चों को उनकी आयु, रुचि एवं योग्यता के अनुसार उनके लिए विविध कार्यकलापों के आयोजन द्वारा विविध अवसर तथा विचार विमर्श करने, सृजन करने तथा प्रदर्शन के लिए साझा मंच उपलब्ध करवाकर उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को तराशता है। यह बच्चों को किसी भी तनाव या दबाव से मुक्त नई चीजें सीखने के लिए असीमित अवसरों सहित विविध उन्मुक्त वातावरण उपलब्ध कराता है।

- यह संस्थान नई दिल्ली में आई. टी. ओ के पास कोटला रोड पर स्थित है तथा 5-16 वर्ष के बच्चों के लिए यहां कार्यकलाप उपलब्ध है।

- बाल भवन मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है।

- यहां रविवार, सोमवार एवं अन्य राजपत्रित अवकाश रहता है। इसकी समयावधि प्रातः 9:00 बजे से सायं 5:30 बजे तक है।

राष्ट्रीय बाल भवन

Topic 29 Date

EVENT HIGHLIGHT = 2019

- राष्ट्रीय बाल भवन मे राष्ट्रीय बाल सभा एवं एकीकरण शिविर को एक वार्षिक उत्सव के रूप मे मनाया जाता है।

- इसका आयोजन प्रत्येक वर्ष 14 नवंबर से 19 नवबंर तक किया जाता है।

- 14 नवंबर को राष्ट्रीय बाल भवन के संस्थापक पंडित ज्वाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस को बाल-दिवस के रूप मे उत्साह के साथ मनाया जाता है।

- इस दिन आनंदोत्सव से परिपूर्ण अत्याधिक-मनोरंजक मेले का आयोजन किया गया। जिसमे भिन्न-2 प्रकार के झूलो, आनन्दल की सवारी, टॉय ट्रेन की सवारी तथा बच्चों के लिए सम्मान भोजन की व्यवस्था भी रही।

- प्रत्येक वर्ष शिविर के लिए एक विशिष्ट विषय (थीम) का चयन किया जाता है इस वर्ष के लिए "सांस्कृतिक संगम" को विषय (थीम) के रूप मे चयन किया गया।

अत थीम की आधारशिला अपने भारत की भव्य सांस्कृतिक विरासत है।

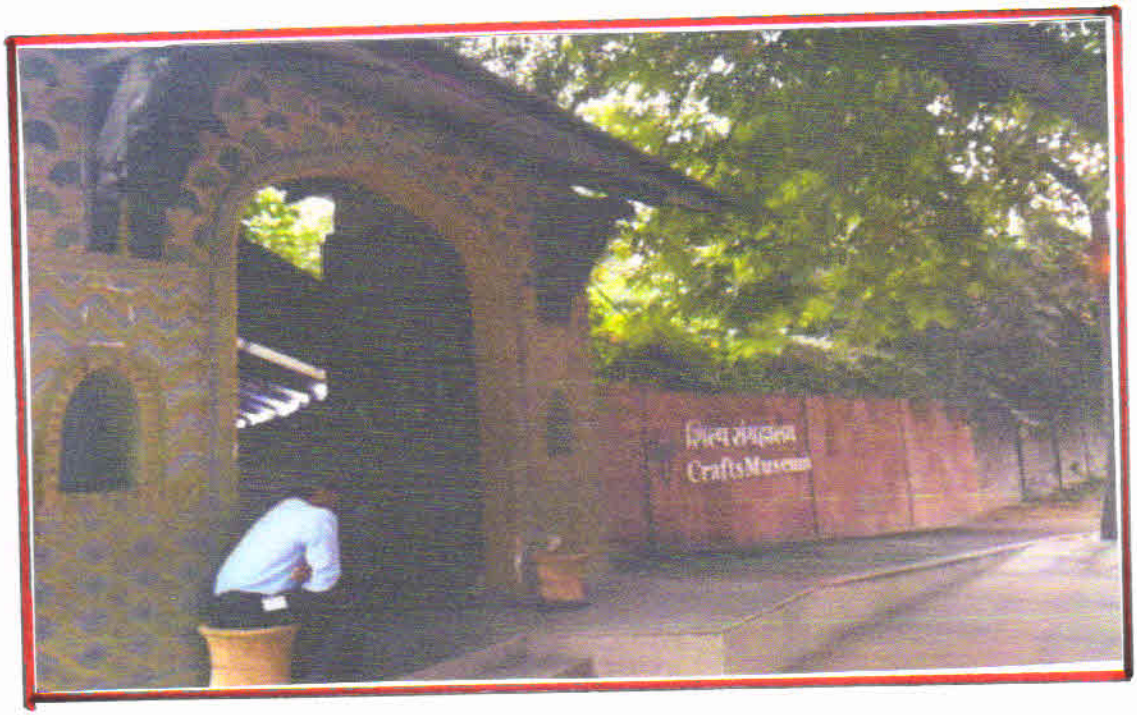
Crafts Museum

Topic _____ Date _____

शिल्प संग्रहालय

CRAFT MUSEUM

शिल्प संग्रहालय जिसका औपचारिक नाम राष्ट्रीय हस्तशिल्प एवं हस्तकरघा संग्रहालय है। नई दिल्ली में प्रगति मैदान में स्थित है। यह दिल्ली में पर्यटक स्थलों में से एक है।

- यह संग्रहालय लगभग 8 ~~एकड़~~ एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है।
- 21 दिसम्बर 1991 को भारत के राष्ट्रपति श्री वेंकटरमण ने विधिवत इसका उद्घाटन किया आज विश्व के प्रमुख पर्यटन स्थलों में इसकी गणना होती है।
- विश्वभर के लाखों पर्यटक यहां भारत की परम्परागत शिल्प एवं कलाओं का सजीव अवलोकन करने आते हैं।
- यहां प्रति माह लगभग पचास कुलाकार अपनी कलाओं का सजीव प्रदर्शन करते हैं।
- यह "शिल्प कला कौशल" के नाम से जाना जाता हो जो वर्ष भर चलता रहता है। इस कार्यक्रम में अनेक पारंपरिक एवं सिद्धहस्त कलाकार आमंत्रित किए जाते हैं।

- यहाँ उन्ही कलाकारो का ही चयन किया जाता है जो की भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय के विकास आयुक्त (हथकरघा एवं हस्तशिल्प) कार्यालय मे पंजीकृत होते है।

- यहां सम्मिलित होने वाले कलाकारो को भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय द्वारा यात्रा व दैनिक भत्ता दिया जाता है। तथा नि:शुल्क आवास की सुविधा प्रदान की जाती है।

- प्रति माह यहाँ आने वाले दर्शक या पर्यटक गोटिपुआ नृत्य, गम्भीरा नृत्य, छाऊ नृत्य, कठपुतली नृत्य व बाउल संगीत आदि के प्रदर्शन का आनंद उठा सकते है।

2. दृश्य कला
VISUAL ART

दृश्य कला चित्रात्मक निर्माण के द्वारा रचना एवं सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम है यह एक अद्वितीय सांकेतिक क्षेत्र एवं ऐसा विषय है जिसकी अपनी विशेष अपेक्षाएँ एवं आधिगम है। दृश्य कला बच्चो को काल्पनिक जीवन मे एवं वास्तविक संसार के बीच सुदृढ़ सम्बन्ध बनाने मे एवं अपने विचारो भावनाओ एवं अनुभवो को दृश्य रूप मे निरोपित करने एवं अभिव्यक्त करने मे मदद करता है।

चित्रकारी, पेंटिंग आदि की रचना करते हुए बालक नए ज्ञान को पुराने अनुभवो से जोड़ते हुए उनकी अर्थपूर्णता को समझने का प्रयास करता है। दृश्यकला विश्लेषण, खोज, अन्वेषण, प्रयोग आदि के माध्यम से बच्चो की रचनात्मक एवं सौंदर्यनुभव बढ़ाता है।

दृश्य कला के प्रकार

(i) चित्रकला
(ii) मूर्तिकला
(iii) हैत चित्रकला
(iv) पेंटिंग

नाट्य एवं कला शिक्षा के निम्नांकित सामान्य लक्ष्य हैं,

(i) बालक को विभिन्न कलाओं द्वारा अपने विचार, भावनाओं एवं अनुभवों को खोज स्पष्टता एवं अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना।

(ii) बालकों को सौंदर्यानुभूति प्रदान करना एवं बालक में दृश्य कलाओं संगीत ड्रामा, नृत्य, साहित्य के प्रति सौंदर्य चेतना विकसित करना।

(iii) बालकों में वातावरण के दृश्य, मौखिक स्पर्श, ध्वनिक गुणों के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता विकसित करना।

(iv) बालक में रचनात्मक अभिव्यक्ति की योग्यता एवं क्षमता विकसित करना जो आनंद पूर्ण हो

(v) बालक को दैनिक जीवन की विभिन्न समस्याओं को उपयुक्त कल्पनाशीलता का प्रयोग करते हुए रचनात्मक रूप से हल करने में सक्षम बनाना और मौलिकता को बढ़ावा देना।

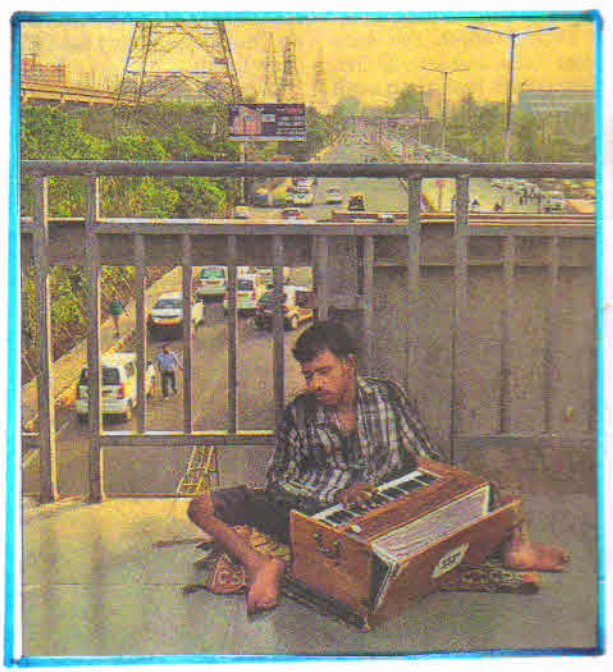

Topic 34 Date

संगीत 3.

Music

वह विज्ञान जिसके द्वारा हम वाक तथा वाद्य यंत्रो दोनो की ध्वनि को मिलाकर उत्पन्न सुंदरता शांति तथा भावाभिव्यक्ति का एक रुप देते है जो कि संवेगों की अभिव्यक्ति करते है। यही संगीत कहलाता है। संगीत का आरंभ कब तथा कहां हुआ यह बात अब तक रहस्य है। जैसा कि हम सभी को पता है कि अनेक कालो जैसे मुगल सल्तनत, मौर्य इत्यादि मे प्रसिद्ध शायर रहे है। ऐसा माना जाता है कि संगीत की शुरुआत 1400 BC मे प्राचीन मिस्त्र मे हुई। बाँसुरी को सबसे पुराना वाद्य यंत्र माना जाता है।

संगीत के प्रकार

(i) मध्ययुगीन संगीत इस संगीत की शुरुआत 400 से 1400 AD तक मानी जाती है। यह संगीत रोमन साम्राज्य मे अधिक फूला फला इस संगीत मे नए - नए प्रकार के शोध किए गए थे

(ii) नवजागरण संगीत इस संगीत को 1400-1600 AD के मध्य किया गया था इस संगीत मे कई ध्वनियाँ थी जिसके कारण

Concept SG Colours & Shapes

Polyphome संगीत का दर्जा दिया गया।

(iii) अत्यंत अलंकृत संगीत — इस संगीत का उदय इटली से माना जाता है। इसका उदय 1600-1750 AD मे माना जाता है। इस संगीत मे उत्साह तथा भावाभिव्यक्ति को मुख्य आधार बनाया गया है। इसमे मानव के सवेंगो की अभिव्यक्ति को बहुत सुन्दर तरीके से गाया जाता था।

(iv) शास्त्रीय संगीत — शास्त्रीय संगीत से तात्पर्य है कुछ निश्चित ध्वनियाँ जिनको वाद्य यंत्र (String quartet and orchestra) द्वारा गाया जाता है। इसमे यूनान तथा रोम दोनो ही सभ्यताओ का मिश्रण है। भारतीय शास्त्र संगीत सम्पूर्ण विश्व मे प्रसिद्ध है।

(v) समकालीन संगीत — समकालीन संगीत को अभिव्यक्तिक संगीत भी कहते है। इस संगीत की शुरुआत 20 वी शताब्दी के आरम्भ मे मानी जाती है। भारतीय शास्त्रीय संगीतकारो ने जब शास्त्रीय संगीत के साथ नए प्रयोग आरम्भ किए उससे परिणामस्वरूप जो संगीत उत्पन्न हुआ उसे भारतीय समकालीन संगीत कहते है।

जैसे :- Rock music, Band music, Hip Hop, Rap etc.

Concept SG Colours & Shapes

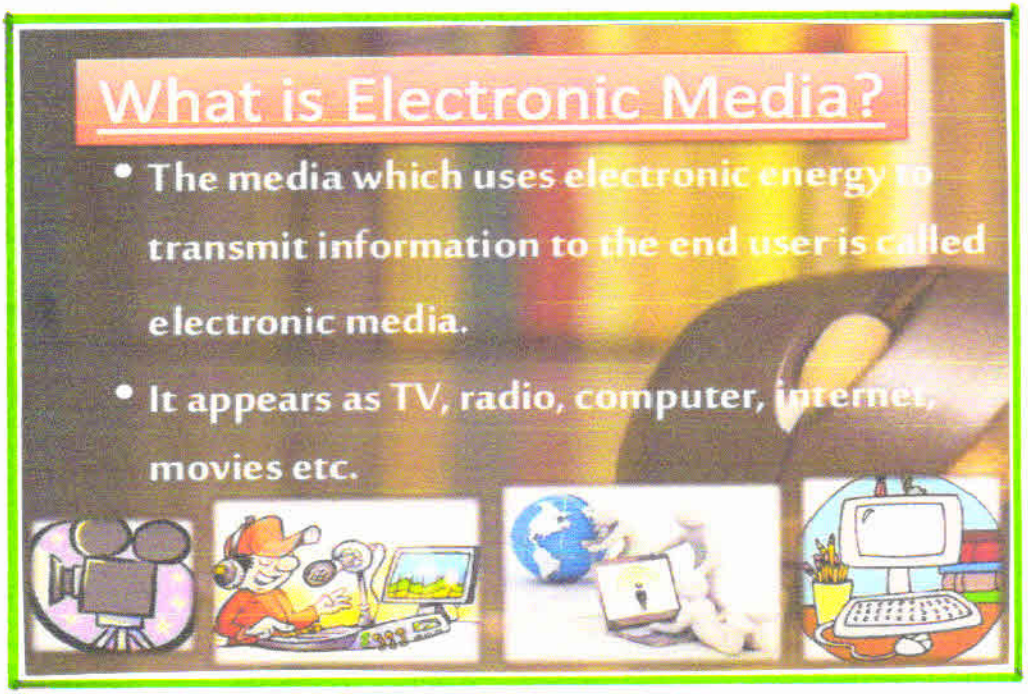

What is Electronic Media?
• The media which uses electronic energy to transmit information to the end user is called electronic media.
• It appears as TV, radio, computer, internet, movies etc.

4. सिनेमा और इलेक्ट्रानिक मीडिया

Cinema and Electronic Media

भारत मे इलेक्ट्रॉनिक मीडियां पिछले 15-20 वर्षों मे हर घर मे पहुंच गया है. फिर चाहे वह शहर हो या ग्रामीण क्षेत्र। इन शहर और कस्बो मे केवल टी.वी से सैकडो चैनल दिखाई जाते है।

एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार भारत के कम से कम 80% परिवारो के पास अपने टेलीविजन सेट है और मैट्रो शहर मे रहने वाले दो तिहाई लोगों ने अपने घर मे केबल कनेक्शन लगवा हुआ है। इसके साथ ही शहर के दूर दराज क्षेत्र से भी लगातार डी.टी.एच "डायरेक्ट टु होम" सर्विस का विस्तार हो रहा है।

प्रारंभ मे केवल फिल्मी क्षेत्रों से जुडे गीत, संगीत और नृत्य से जुडी प्रतिभाओ के प्रदर्शन का माध्यम बना एवं लंबे समय तक बना रहा इससे ऐसा लगा की इलेक्ट्रानिक मीडियां सिर्फ फिल्मी कला क्षेत्रो से जुडी प्रतिभाओ के प्रदर्शन के मंच तक ही सिमट कर रह गया है। जिससे नैसर्गिक और स्वाभाविक प्रतिभा प्रदर्शन के अपेक्षा नकल को ज्यादा तवज्जो दी जा रही है।

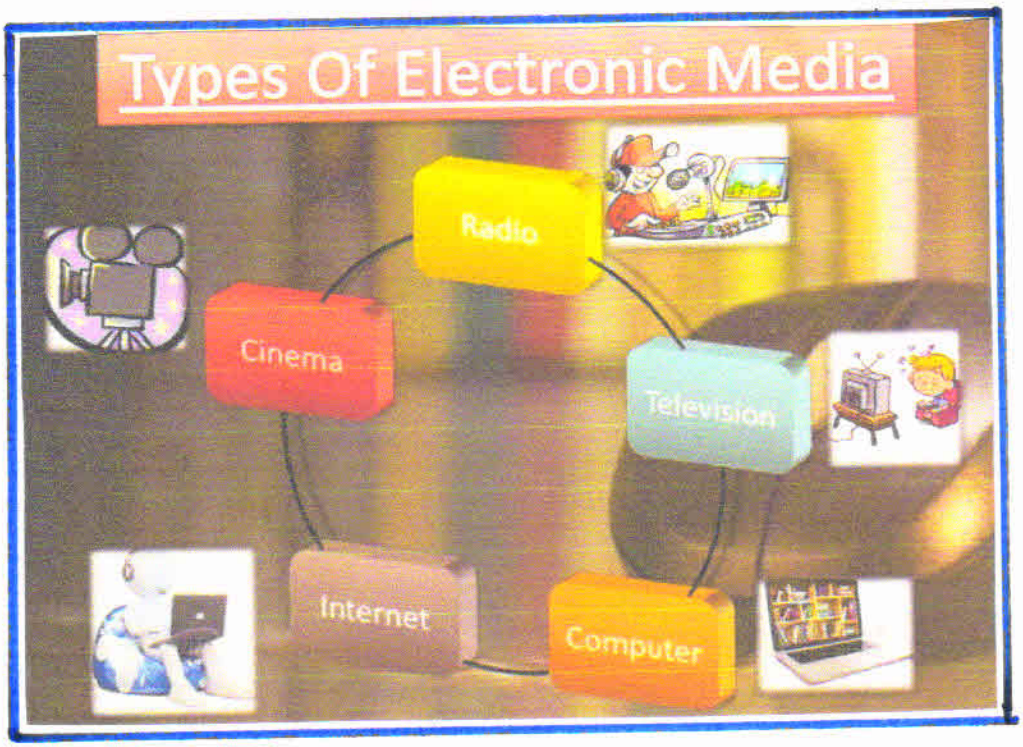
Types Of Electronic Media
Radio
Cinema
Television
Internet
Computer

Topic Date

रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा व मल्टीमीडिया इलेक्ट्रानिक मीडिया के अवयव है

इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रसारण सिद्धांत

ध्वनि — ध्वनि ही दृश्य चित्र के निर्माण मे सहायक होता है. घोड़े की टाप, पशु-पक्षियो की चहचहाट, बारिश की बूंदे, लाठी की ठक-ठक आदि का आनंद रेडियो पर ध्वनि द्वारा ही लिया जा सकता है.

चित्रात्मकता — ध्वनियो और चित्रो का एक साथ संप्रेषण ही टेलीविजन की वास्तविक प्रक्रिया है। इसके प्रसारण मे चित्रो के साथ-साथ ध्वनि के कलात्मक उपयोग पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

संगीत — संगीत ही मनोरंजन की ऐसी विधा है जिससे मनुष्य ही नही बल्कि सर्प, हिरन जैसे पशु भी मंत्रमुग्ध हो जाते है।

कैमरा — प्रोड्यूसर को शूटिंग के समय, शूटिंग सीक्वेंस का क्रम निर्धारित करना पड़ता है. दूरदर्शन एवं फिल्म लेखन मे तीन (S) का प्रयोग प्रचुर मात्रा मे होता है यानि शाट, सीन सीक्वेंस रेडियो की भाषा सरल व आसानी से समझ आने वाली हो।

थोडी मे अपनी बात कहना ही इसकी विशेषता है।

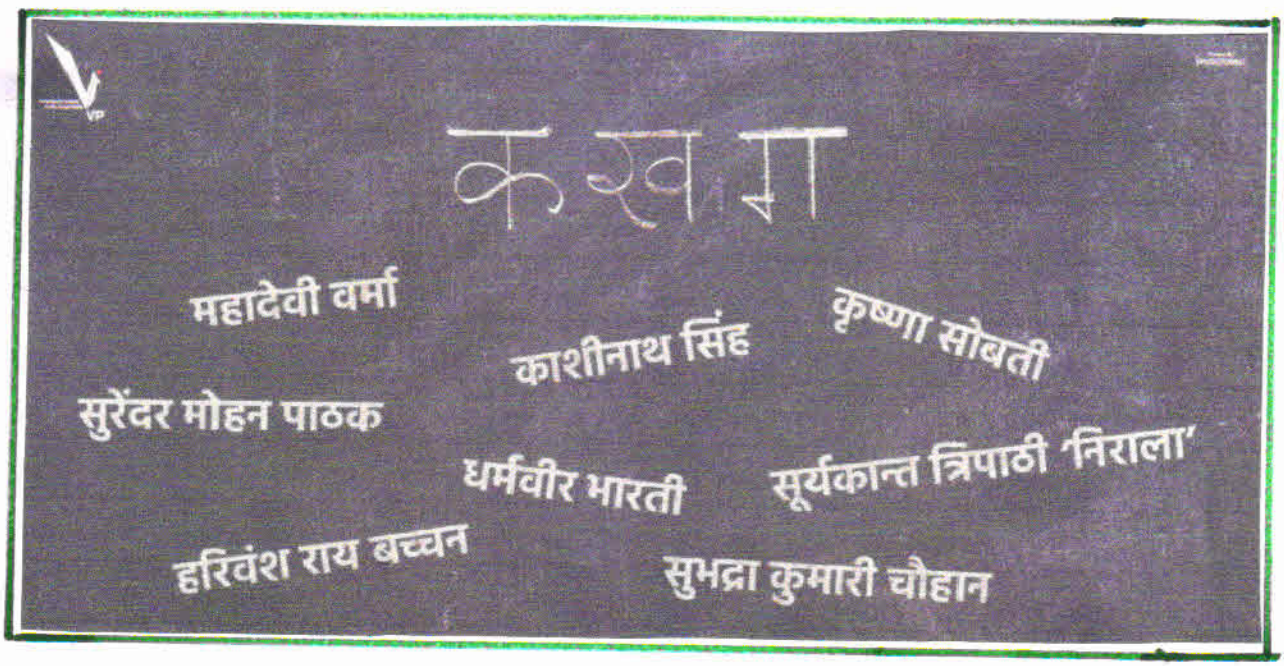
क ख ग
महादेवी वर्मा
काशीनाथ सिंह
कृष्णा सोबती
सुरेंदर मोहन पाठक
धर्मवीर भारती
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
हरिवंश राय बच्चन
सुभद्रा कुमारी चौहान

Topic 38 Date

5. हिन्दी साहित्य

Hindi Literature

हिंदी साहित्य विश्व मे सार्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओ मे से एक हिंदी है। उसकी जड़े प्राचीन भारत मे संस्कृत भाषा मे तलाशा जा सकता है। परंतु हिंदी साहित्य की जड़े मध्ययुगीन भारत की अवधी, मगधी, अर्धमगधी तथा मारवाड़ी जैसी भाषाओ के साहित्य मे पाई जाती है। हिंदी मे गद्य का विकास बहुत बाद मे हुआ। और इसने अपनी शुरुआत कविताओं के माध्यम से की जो कि ज्यादातर लोक भाषा के साथ प्रयोग कर विकसित की गई

हिंदी साहित्य का इतिहास व विकास

हिंदी साहित्य का आरंभ आठवी शताब्दी से माना जाता है। हिंदी का आरंभिक साहित्य अपभ्रंश मे मिलता हिंदी मे तीन प्रकार का साहित्य मिलता है, गद्य, पद्य और चंपू। चंपू साहित्य अर्थात जो गद्य और पद्य दोनो मे है।

कुछ साहित्यकार लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखे गए उपन्यास परीक्षा गुरु को पहली प्रमाणिक गद्य रचना मानते है।

हिंदी साहित्य एक बड़ा और लिखित साहित्य है।

हिंदी के कुछ शब्द संस्कृत भाषा से लिए गए है।

39

Topic ____ Date ____

(ii) आदिकाल —— इस काल का प्रारंभ सं. 1050-1375 तक रहा। इस काल के कवियों की रचना वीर और श्रृंगार रस से परिपूर्ण है जिसमे वीर रस प्रधान है और श्रृंगार रस गौण है। यह रचनाएँ दो रूप मे मिलती है प्रबंध और मुक्त काव्य।

(ii) भक्तिकाल —— इस काल का कालांश सं. 1375-1700 तक माना गया है इस काल मे भारतीय पराधीन हो गए थे निराशा और हताश होने पर प्रभु का स्मरण स्वाभाविक था। इस काल मे दो प्रकार का काव्य लिखा गया। पहला निर्गुण भावती काव्य, दूसरा सगुण भावती काव्य।

(iii) रीति काल —— इस काल का कालांश सं. 1700-1900 तक माना गया। रीतिकाल को श्रृंगार काल भी कहा जाता है। राधा-कृष्ण के प्रेम के स्थान पर नायक-नायिका के प्रेम को स्थान दिया जाने लगा। इस काल की तीन प्रमुख प्रवृतियाँ है (1) शुद्ध श्रृंगारिक भाव (2) रीति काव्य अथवा लक्षण ग्रंथो की विवेचना (3) वीर रस अभिव्यक्ति

(iv) आधुनिक काल —— इसका कालांश सं. 1900 से लेकर वर्तमान माना जाता है इस काल मे राष्ट्रीय भावनाएँ पनपने लगी। अध्ययन की सुविधा के लिए आधुनिक काल को तीन भागो मे बाँटा जा सकता है (1) भारतेंदु युग (2) महावीर प्रसाद द्विवेदी युग (3) उसके बाद के समय को तृतीय उत्थान माना जाता है।

Vinita Jain
24/02/2021

Head Teacher
Govt. Primary School
DLF Phase-1 (...)
G-Block, Gurugram

Concept
Colours & Shapes